पत्तन भारती

हिन्दी गृह पत्रिका

चतुर्थ अंक • 2, अक्तूबर, 2020

श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट ,कोलकाता

पत्तन-गीत

(कोलकाता पोर्ट के 150वें वर्ष समारोह के अवसर पर)

कोलकाता पोर्ट पहला बन्दरगाह हो,
आशा हो तुम, उम्मीद हो तुम
एक नए कल का गीत हो तुम
कोलकाता पोर्ट पहला बन्दरगाह हो,
तुम प्रगति का द्वार हो, एक नया संसार हो
आशा हो तुम उम्मीद हो तुम
एक नए कल का गीत हो तुम
इस हावड़ा पुल के सीने पर है लिखी दास्तां जीवन की
इस पुल के पीछे खड़े हो तुम सुनते हो आवाज़ हर धड़कन की
इस पार हो, उस पार हो
इस शहर का तुम आधार हो
तुम प्रगति का द्वार हो
एक नया संसार हो
कोलकाता-हल्दिया पोर्ट तुम्हारे नाम और भी कितने
पर हमको तो बस लगता है, तुम सच करते हो सब सपने
आशा हो तुम उम्मीद हो तुम
एक नए कल का गीत हो तुम
तुम सदा बदलते आए हो, संग-संग तुम चलते आए हो
श्रमिकों का योगदान लिए, दीपक सा जलते आए हो
बस, बन्दरगाह कहाँ हो तुम, तुम विश्वास की सरगम हो
तुम साक्षी हो इतिहास का एक नए कल की धड़कन हो
आशा हो तुम उम्मीद हो तुम
एक नए कल का गीत हो तुम
कोलकाता पोर्ट पहला बन्दरगाह हो,
तुम प्रगति का द्वार हो, एक नया संसार हो
आशा हो तुम उम्मीद हो तुम, एक नए कल का गीत हो तुम

पत्तन भारती
हिन्दी गृह पत्रिका

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

KOLKATA PORT TRUST 150 years GLORIOUS PAST · VIBRANT FUTURE

श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता
की गृह पत्रिका
अंक : चतुर्थ
2 अक्तूबर, 2020

संरक्षक :
श्री विनीत कुमार, आईआरएसईई
अध्यक्ष

उपसंरक्षक :
श्री ए. के. मेहरा
उपाध्यक्ष

संपादक मण्डल :
डॉ0 प्रीति महतो
मुख्य सतर्कता अधिकारी

श्री अशोक कुमार जैन
मुख्य अभियंता

श्री एस. के. धर
सचिव (प्रभारी)

सह-संपादक :
श्री अशोक कुमार ठाकुर
वरिष्ठ सहायक सचिव (राजभाषा)

सम्पादन सहयोग :
श्री शुभम साव, हिन्दी सहायक
श्रीमती नीलू सिंह, आशुलिपिक
श्री रामनरेश साव, टंकक

पत्राचार :
हिन्दी कक्ष,
श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता
(पूर्ववर्ती कोलकाता पत्तन न्यास)
15, स्ट्रैंड रोड, कोलकाता- 700 001.
ई-मेल : ashok@kolkataporttrust.gov.in

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
संदेश	2-3
सम्पादकीय	4
कोलकाता पत्तन का एक ऐतिहासिक क्षण-श्रीमती शर्मिष्ठा प्रधान, पूर्व सचिव	5
श्यामा प्रसाद मुखर्जी पत्तन की उपलब्धियाँ और गतिविधियां	6-10
विचार मंथन : डॉ0 प्रीति महतो, मुख्य सतर्कता अधिकारी	11
गिरमिटिया एक करुण कथा - अशोक कुमार ठाकुर, वरिष्ठ सहायक सचिव	12-13
संस्मरण - श्री ओ.पी. राय, उप प्रबंधक प्रशासन, हल्दिया	14-15
जेल बना राष्ट्रीय स्मारक, संकलित, साभार, राजभाषा परिवार	16-17
कोलकाता पत्तन : इतिहास के गलियों से वर्तमान के राजमार्ग तक - श्री सुनील कुमार पाण्डेय, पूर्व हिन्दी अनुवादक (संविदात्मक)	18-20
जनसंख्या नियंत्रण - श्रीमती नर्गिस यास्मीन, वरिष्ठ विधि अधिकारी	21-22
हिन्दी दिवस तथा हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन	23-27
● विभिन्न गतिविधियों का छाया-चित्र	
● हिन्दी टिप्पणी सहायिका का विमोचन	
● कार्यशालाएं आदि	
कविताएं : अस्मिता - सुश्री कांता झा - सहायक प्रबंधक (राजभाषा)	28
प्रार्थना - श्री विश्वेश्वर कुमार दास, यू.डी.सी.	28
कोई जवाब नहीं - श्री रामनरेश साव, हिन्दी टंकक	29
वृक्ष - श्री दीपचंद यादव - लिफ्ट ड्राइवर	29
शिक्षा का व्यावसायीकरण - श्री प्रतीक कुमार झा, कार्यपालक अभियंता	30-31
हमारे जीवन पर इंटरनेट व मोबाइल फोन का प्रभाव : श्री विनय कुमार सुले, कार्यपालक अभियंता	32-33
चुनौतियाँ : श्री शुभम साव, हिन्दी सहायक	34
अनमोल वचन : सुश्री भानूप्रिय दास	35
शिक्षा का अर्थ - श्री अमित कुमार दास	35
स्वच्छता - श्रीमती नीलू सिंह, आशुलिपिक	36
आपके पत्र	37
कुछ अन्य गतिविधियां	

अस्वीकरण
पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों की निजी अभिव्यक्ति है। इसकी मौलिकता का दायित्व पूर्णतया संबंधित लेखकों पर है। श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट अथवा संपादक मण्डल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संदेश

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट अपने अन्य दायित्वों के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सदा प्रयत्नशील है। इसी कड़ी में पत्तन भारती के पुनः प्रकाशन के सुअवसर पर मैं आप सबको हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

हम सभी कोविड-19 की इस विषम परिस्थिति में अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इस कठिन समय में भी पत्तन का कार्य निर्बाध रूप से संचालित होता रहा इसके लिए मैं आप सभी का आभार व्यक्त करता हूँ। इस पत्रिका के माध्यम से मैं उन कोरोना योद्धाओं का भी अभिनंदन करना चाहता हूँ जो इसके विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं और हमें सुरक्षित और स्वस्थ रखने में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं।

पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के विकास और प्रचार-प्रसार में अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वहन करती है तथा भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण भी बनाता है। हिन्दी प्रतियोगिताओं के आयोजन से कर्मचारियों के लेखन-शैली में अविरत निखार आ रहा है और नए-नए विषयों और शब्दों का ज्ञान बढ़ रहा है। कार्यालय में राजभाषा संबंधी निरीक्षण से कर्मचारियों में राजभाषा नियम, अधिनियम और निर्देशों की जानकारी और उनके अनुपालन का दायित्व-बोध भी हो रहा है। मुझे अपेक्षा है कि सभी विभाग अपना कार्य राजभाषा हिन्दी में निष्पादित करेंगे एवं भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी निर्दिष्ट आदेशों का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। मुझे आशा है कि इस कोरोना-काल में राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का अधिक से अधिक प्रयोग कर राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की गति को बनाए रखा जाएगा।

शुभकामनाओं सहित,

(विनीत कुमार)
अध्यक्ष
श्यामा प्रसाद मुखर्जी पत्तन

संदेश

मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि पत्तन की गृह पत्रिका **'पत्तन भारती'** का चतुर्थ अंक प्रकाशित हो रहा है। इसके माध्यम से एक बार फिर मुझे आप सभी से संवाद करने का अवसर प्राप्त हुआ है। जैसा की आप जानते है हमारा पत्तन देश का प्राचीनतम पत्तन है और यह अपना 150वां वर्ष पूरा कर रहा है। यह पत्तन शेष विश्व के लिए पूर्वी भारत का प्रवेश द्वार है। कोविड-19 महामारी के इस अभूतपूर्व परिस्थिति में भी जिस प्रकार हमारे अधिकारी और कर्मचारीगण ने सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करते हुए पत्तन के संचालन को लगातार जारी रखा इसके लिए मैं आप सभी का अभिनंदन करना चाहता हूँ।

भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय होने के नाते, संवैधानिक दृष्टि से सरकारी काम-काज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करना हमारे लिए अपेक्षित है और हमारा दायित्व है। लेकिन भारत का नागरिक होने के कारण यह हमारा नैतिक कर्तव्य भी है कि हम हिन्दी का प्रयोग औपचारिकता-वश नहीं बल्कि सहज रूप में करें और जन-व्यवहार में हिन्दी को अपनाएं।

हिन्दी पत्रिका 'पत्तन भारती' के माध्यम से कार्मिकों और परिवार के सदस्यों की लेखन-प्रतिभा तो विकसित हो ही रही है साथ-ही रचनाओं के माध्यम से यह पत्रिका कार्मिकों और उनके परिवारों को जोड़ने का काम भी बखूबी निभा रही है।

आइए, हम सब मिलकर पूर्ण समर्पण और लगन के साथ कार्य करते हुए देश और समाज के प्रति अपने दायित्वों को पूरा करने में अपना भरपूर योगदान दें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

ए. के. मेहरा

(ए. के. मेहरा)
उपाध्यक्ष (कोलकाता)
श्यामा प्रसाद मुखर्जी पत्तन

सम्पादकीय

श्यामा प्रसाद मुखर्जी पत्तन (पूर्ववर्ती कोलकाता पत्तन न्यास) के कर्मचारियों में हिंदी भाषा में रचनात्मक लेखन का कौशल व चिंतन को प्रोत्साहित करने के लिए हिंदी में 'पत्तन भारती' नामक पत्रिका निकालने का निर्णय तत्कालीन पत्तन प्रशासन द्वारा लिया गया था। तदनुसार, पत्रिका का प्रथम अंक जनवरी 1993 में और द्वितीय अंक सितंबर, 1993 में डॉ0 अनिमेष चन्द्र राय, तत्कालीन अध्यक्ष के कार्यकाल में प्रकाशित हुआ। तत्पश्चत, एक लंबे अंतराल के बाद मार्च 2017 में तत्कालीन अध्यक्ष एम.टी. कृष्णबाबू के कार्यकाल में इस पत्रिका के तृतीय अंक का प्रकाशन हुआ था। इसके द्वारा निरंतर कौशल संवर्धन का प्रयास किया जाता रहा है। इस वर्ष यह पत्रिका अपने चतुर्थ अंक में रचनात्मक कौशल का विस्तारित रूप लिए आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

प्रस्तुत अंक में समसामयिक एवं विभिन्न पहलुओं पर उपयोगी व वैचारिक मंथन की सामग्री देने का प्रयास किया गया है।

'कोलकाता पत्तन का एक ऐतिहासिक क्षण', गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रथम पत्तन-झाँकी का गौरवशाली विवरण है तो साथ ही वर्ष 2019-20 में पत्तन की उपलब्धियाँ भी विस्तृत रूप से दी गई है। हाल में आई प्राकृतिक आपदा 'कोविड-19' व आमफन की त्रासदी को रेखांकित करता एक 'संस्मरण' और 'विचार-मंथन' प्रस्तुत है। पत्रिका में 'गिरमिटिया-एक करुण कथा' नामक लेख 'गिरमिट लोगों' की दुरवस्था का मार्मिक चित्रण करता है, तो वहीं 'जेल बना राष्ट्रीय स्मारक' स्वतंत्रता आंदोलन के सेनानियों की त्रासदी का हृदयस्पर्शी वर्णन है। 'जनसंख्या नियंत्रण' एवं 'शिक्षा का व्यावसायिकरण' समसामयिक निबंध है। कविता की नाजुक डोर संभाली है परिंदो सी 'अस्मिता' ने और सुयोग दिया है 'प्रार्थना', 'कोई जवाब नहीं' एवं 'वृक्ष' की उद्दात भावनाओं ने। वाद-विवाद शैली में प्रस्तुत 'हमारे जीवन पर इंटरनेट व मोबाइल फोन का प्रभाव' ज्वलंत समस्याओं के दुष्परिणामों से बचने के उपाय भी समेटे है। 'चुनौतियां' जहां पत्रकारिता पर विचारोत्तेजक लेख है वहीं 'स्वच्छता' ज्ञानवर्धक व समसामयिक। 'अनमोल वचन' व 'शिक्षा का अर्थ' प्रबुद्ध-वर्ग के चिंतन के लिए सामग्री समेटे हुए हैं।

समिति पत्तन के माननीय अध्यक्ष और उपाध्यक्ष महोदय की आभारी है जिनके निरंतर प्रयास और सकारात्मक सोच ने पत्तन को नई ऊँचाइयाँ दी है, इस कठिन समय में भी हमने विकास के नए आयाम हासिल किए हैं। साथ-ही-साथ, राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के प्रति अधिक सकारात्मकता और गति आई है। उनके सतत उत्साहवर्द्धन एवं मार्गदर्शन के बिना पत्रिका का चतुर्थ अंक का यह रूप लेना कदाचित संभव नहीं था। अतः इसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं।

यह समिति, हिन्दी के कार्यान्वयन में बेहतर निष्पादन के लिए अंतर्विभागीय राजभाषा ट्रॉफी के विजेता, उपविजेता और सह-उपविजेता विभाग/प्रभाग को साधुवाद देती है। साथ ही राजभाषा पुरस्कार पाने वाले सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का हार्दिक अभिनंदन करती है। यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि गत वर्ष हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर टिप्पणी-सहायिका नामक पुस्तिका का विमोचन अध्यक्ष, श्याम प्रसाद मुखर्जी पोर्ट द्वारा किया गया, जिसे अधिकांश कर्मचारियों ने दैनंदिनी कार्यालयीन कार्यों में अत्यंत उपयोगी पाया।

आशा है कि पूर्व की भांति इस अंक को भी पाठकगण अत्यंत रुचिकर एवं उपयोगी पाएंगे। प्रबुद्ध पाठकों का सहयोग व उनकी सटीक प्रतिक्रिया अपेक्षित है ताकि इस पत्रिका के आगामी अंक को अधिक लाभप्रद एवं सुरुचिपूर्ण बनाया जा सके।

प्रतीक्षा में,

संपादक समिति

कोलकाता पत्तन का एक ऐतिहासिक क्षण

कोलकाता पत्तन अपने गौरवशाली अतीत का 150वां वर्ष पालन कर रहा है। डेढ़ सौ वर्ष प्राचीन पत्तन पर चर्चा के दौरान, अचानक सुरक्षा सलाहकार महोदय ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर पत्तन की झांकी की बात छेड़ दी। प्रस्ताव बेहद पसंद आया और इसका अनुमोदन भी हो गया। इसके बाद, अगले कदम के बारे में किसी को भी कोई जानकारी नहीं थी। शुरू हुई खोज, कैसे यह संभव किया जाए। शीघ्र-ही पता चला कि झांकियों की चयन प्रक्रिया का कार्य रक्षा मंत्रालय के पास है। अपना प्लान और डिजाइन लेकर जब हम दिल्ली पहुंचे तब पता चला कि 24 मंत्रालयों के प्रस्तावों में से 5 या 6 का चयन होगा। हमने हौसला नहीं छोड़ा। संस्कृति और कला के गणमान्य विशेषज्ञों के परामर्श से हमारे प्रस्तावित डिज़ाइन में कई बदलाव किए गए और अंत में एक ऐसी सुंदर झांकी बन गयी जिसने सभी को आश्चर्य चकित और मंत्रमुग्ध कर दिया।

हमारी झांकी के अग्रभाग में एक पुराने जहाज की विरासत प्रतिकृति थी, जो प्रारम्भिक समय में डॉक में आने वाली जहाजों की याद को ताजा करती है। यहां सिर पर माल ढोते हुए मजदूरों को दर्शाया गया था। ऐतिहासिक लाइट हाउस और क्लॉक टावर भी थे, जो इस बन्दरगाह के गौरवशाली समुद्री सफर को प्रतिबिम्बित करते हैं। झांकी के मध्य भाग में हावड़ा ब्रिज को दर्शाया गया जो कि भारत की सर्वोत्तम इंजीनियरिंग एवं स्थापत्य कला की मिसाल है। इस ब्रिज का रखरखाव कोलकाता पत्तन ही करता रहा है। झांकी के अंतिम भाग में कोलकाता गोदी प्रणाली एवं हल्दिया गोदी परिसर के कार्यों को प्रदर्शित किया गया था। इसमें कंटेनर-ट्रक, कोयला संचालन, 200 टन केंटीलीवर क्रेन, बास्कल ब्रिज की प्रतिकृतियां परिलक्षित थी।

राजपथ पर जब यह झांकी गुजर रही थी तब पत्तन-गीत वातावरण में गुंजायमान हो रहा था -

कोलकाता पोर्ट पहला बन्दरगाह हो,
आशा हो तुम, उम्मीद हो तुम,
एक नए कल की गीत हो तुम,
कोलकाता पोर्ट पहला बन्दरगाह हो,
तुम प्रगति का द्वार हो, एक नया संसार हो...

सभी का हृदय गर्व और उल्लास से भर गया था। यह पहली बार हुआ जब पोत परिवहन मंत्रालय की झांकी गणतंत्र दिवस के अवसर पर चुना गया था।

श्रीमती शर्मिष्ठा प्रधान,
तत्कालीन सचिव

श्यामा प्रसाद मुखर्जी पत्तन, कोलकाता
(पूर्ववर्ती कोलकाता पत्तन न्यास)
गौरवशाली अतीत - अनुनादित भविष्य

उपलब्धियां

- कोविड -19 महामारी के प्रकोप के बावजूद यातायात संचालन में वृद्धि दर्ज की गई है। विगत वर्ष के 63.763 मिलियन टन के मुक़ाबले वर्ष 2019-2020 में 63.938 मिलियन टन का संचालन हुआ। जहाँ एचडीसी ने पिछले वर्ष की तुलना में 3.25% की वृद्धि के साथ 46.680 मिलियन टन का संचालन किया, वही केडीएस ने 2019-20 में 17.303 मिलियन टन माल ढुलाई की। श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता ने 2018-19 में 8,29,482 टीईयूज के मुक़ाबले 2019-20 में 8,44,762 टीईयूज का संचालन किया और 1.84% की वृद्धि दर्ज की। कंटेनर ट्राफिक के मामले में सभी प्रमुख भारतीय बन्दरगाहों में हमारा पोर्ट तीसरे स्थान पर है। केडीएस ने विगत वर्ष की तुलना में 3.66% की वृद्धि दर्ज करते हुए 6,75,439 टीईयूज का संचालन किया और एचडीसी ने वर्ष 2019-2020 में 1,69,323 टीईयूज संचालित किया।

- वर्ष 2019-2020 में, श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता ने **जुलाई 2019** के दौरान 77,139 टीईयूज के उच्चतम मासिक कंटेनर यातायात का संचालन किया। केडीएस ने **अक्टूबर 2019** में 62,710 टीईयूज का उच्चतम मासिक कंटेनर यातायात का संचालन किया।

- कोविड 19 महामारी के प्रकोप के फलस्वरूप **अप्रैल-जुलाई, 2020** के दौरान क्रमशः होने वाले लॉकडाउन के कारण माल यातायात में 26.09% की गिरावट दर्ज की गई। श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता में **अप्रैल-जुलाई 2020** के दौरान 16.05 मिलियन टन यातायात का संचालन हुआ जबकि **अप्रैल-जुलाई 2019** के दौरान 21.717 मिलियन टन संचालित हुआ था। श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता के जरिए होने वाले अंतरराष्ट्रीय व्यापार का 60% चीन और अन्य दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के मार्ग से होता है, इस दौरान क्रमशः होने वाले लॉकडाउन के कारण बंदरगाह के माल यातायात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। हालाँकि, एचडीसी के माध्यम से लौह-अयस्क और इस्पात का निर्यात लॉकडाउन के बाद भी तेजी से बढ़ रहा है।

- श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट,कोलकाता ने **अप्रैल-जुलाई, 2020** के दौरान 1,90,190 टीईयूज (केडीएस : 1,48,287 और एचडीसी : 41,903) संचालित किया, जबकि **अप्रैल-जुलाई, 2019** के दौरान 286,156 टीईयूज (केडीएस : 2,25,714 टीईयूज और एचडीसी : 60,442 टीईयूज) संचालित हुआ था। फलस्वरूप 33.54% की गिरावट दर्ज की गई।

उल्लेखनीय उपलब्धियां :

दिनांक 16/7/2020 भारत और बांग्लादेश के समुद्री-व्यापारिक संबंधों का ऐतिहासिक दिन था, जब माननीय श्री मनसुख मांडविया, केन्द्रीय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पोत परिवहन मंत्रालय, भारत सरकार, ने कंटेनरों को कोलकाता से बांग्लादेश के चट्टोग्राम पोर्ट होते हुए त्रिपुरा के लिए रवाना की।

- केपीडी में कंटेनर संचालन प्रारंभ होने से तटीय व्यापार में वृद्धि हुई है। एक दशक से अधिक समय के बाद KPD, KDS में कंटेनर संचालन शुरू हुआ। खिदिरपुर डॉक (केपीडी-I पश्चिम) के कायाकल्प से संबंधित एक परियोजना [(95.66 करोड़ रुपये (प्रथम चरण)] पीपीपी प्रणाली के माध्यम से निर्माण, उपस्करण और हस्तांतरण आधार पर ली जा रही है, जो एफ़एससी के अनुमोदनाधीन है।
- कोलकाता और कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (CSL) के बीच हाल ही में किए गए एक रियायत अनुबंध के अनुरूप कोचिन कोलकाता शिप रिपेयरिंग यूनिट (CKSRU) का केडीएस में पूर्ण परिचालन हुआ, इससे श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता के एनएसडी पर 2 ड्राई डॉक्स और बर्थ न. 6 पर पोत मरम्मत सुविधाओं का उन्नयन, परिचालन और प्रबंधन किया जा सकेगा। 3 केपीडी ड्राई डॉक्स की आउटसोर्सिंग के लिए EOI आमंत्रित किया गया है जिसके लिए प्रस्तावों की जांच की जा रही है।
- हाल-ही में, सागर/सैंडहेड्स एंकरेज में दो फ्लोटिंग क्रेन्स और हल्दिया में एक बार्ज जेट्टी के चालू होने से कोलकाता का यह मल्टी-ड्राफ्टेड पोर्ट केपसाइज और फुल लोड पनामैक्स जहाज, गियरलेस जहाजों के माध्यम से अतिरिक्त 2 मिलियन टन कार्गो सहित संचालित करने में सक्षम हुआ है। यह एंकरेज में उच्च ड्राफ्ट और एचडीसी में ट्रांसलोडिंग परिचालन की सुविधा उपलब्ध कराता है ।
- 1.1.2020 को एम वी मिनरल स्टोनहेंज ने सैंडहेड्स में फ्लोटिंग क्रेन के जरिए 20,100 टन कोयले का निर्वहन किया, यह उच्चतम निर्वहन था, जो दिनांक 19.10.2018 को एमवी सामजॉन सॉलिडैरिटी से आए 17,795 टन के पिछले रिकॉर्ड को पार कर गया।
- दिनांक 27.03.2020 को, एचडीसी ने एक-ही दिन में 22,600 एमटी स्टीम कोयले का उच्चतम संचालन दर्ज किया। यह संचालन सैंडहेड्स के लाइटरेज पॉइंट पर हुआ जो एमवी गोल्डन एंटरप्राइज के लिए 2 फ्लोटिंग क्रेन तैनात कर किए गए थे।
- पहली बार, सैंडहेड्स और सागर लंगरगाहों पर पूरी तरह भरी हुई सुपरमैक्स बल्क कैरियर एमवी इलेक्ट्रा से 61853 एमटी स्टीम कोयला डिस्चार्ज किया गया, जिसे बार्जों के जरिए केडीएस लाया गया।
- 14.11.19 को एमवी शाइनिंग ब्लिस नामक जहाज लाइमस्टोन का उच्चतम पार्सल भार (36695 एमटी) के साथ एचडीसी के इंपाउंडेड डॉक में प्रवेश किया।
- डायमंड हार्बर में मौजूदा तीन एंकरेजों की क्षमता बढ़ाने और गियरलेस जहाजों में कार्गो संचालन के लाइटरेज/टॉपिंग-अप की अनुमति देने के लिए, खुली निविदा के माध्यम से पहचानी गई पार्टी को 15वर्षो के लिए एक उपयुक्त लाइसेंस जारी करने का प्रस्ताव किया गया है। राजस्व साझा करने के आधार पर, एक निजी ऑपरेटर के जरिए, निविदा प्रक्रिया के माध्यम से चयन किया जाना है। विस्तृत RFQ, RFP आदि को अंतिम रूप देने के लिए PMU की नियुक्ति की गई है।
- उत्तर-पूर्वी क्षेत्र (NER) से कनेक्टिविटी में सुधार पर सरकार के प्रयासों के अनुरूप, दिनांक 4.11.2019 को अंतर्देशीय पोत एम.वी. माहेश्वरी ने एचडीसी से 53 टीईयूज पेट्रोकेमिकल्स, खाद्य तेल और पेय-पदार्थों को लेकर NW- I (गंगा नदी), NW-97 (सुंदरवन), भारत-बांग्लादेश प्रोटोकॉल (IBP) रूट और NW-2 (ब्रह्मपुत्र नदी) से होते हुए, एक एकीकृत आईडब्ल्यूटी (परिवहन) के माध्यम से गुवाहाटी, असम के पांडु टर्मिनल गया। इस अंतर्देशीय जल परिवहन (IWT) मार्ग पर यह पहला कंटेनरीकृत कार्गो परिवहन था।

- 17.08.2019 को एचडीसी के बर्थ नंबर 6 पर,एमटी जौजू ने 20,235 एमटी सोयाबीन तेल का निर्वहन किया। यह श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता के एचडीसी में एक दिन में खाद्य तेल का उच्चतम निर्वहन है।
- केडीएस में फीडर परिचालन के लिए एमएचसी बर्थ पर कंटेनर जहाजों की फिक्स्ड विंडो बर्थिंग शामिल की गई। इससे दक्षता बढ़ेगी और माल का संचालन आयतन बढ़ेगा। 3 साप्ताहिक खिड़कियां 1.8 लाख टीईयूज आयतन संचालन सुनिश्चित करती है।
- एचडीसी में लॉक गेट कार्य के इंटरचेंजिंग को पूरा किया गया। जिसका उद्देश्य अधिक संख्या में पोत की सर्विसिंग करना था, जिससे टीआरटी कम हो सके।
- बढ़ती यातायात की जरूरत और सड़क के भीड़ को कम करने के लिए एनडब्ल्यू-1 पर बालागढ़ (केओपीटी से 85 कि. मी. उत्तर) में विस्तारित पोर्ट गेट सुविधा से संबंधित परियोजना के लिए, अंतिम डीपीआर प्रक्रियाधीन था। आईपीए द्वारा व्यवहार्यता रिपोर्ट प्रस्तुत की गई है। ड्राफ्ट डीपीआर के अनुसार, परियोजना की अनुमानित लागत 519 करोड़ (3.80 एमटीपीए की पूर्ति के लिए) है। अंतिम DPR की प्रक्रिया जारी है।

हरित परियोजना और क्रूज/हेरिटेज टूरिज्म

- पर्यावरण संरक्षण और हरित नीति के एक अंश के रूप में, शहरी वानिकी, हरित दीवार, वर्षा जल संचयन की पहल केओपीटी द्वारा की गई। एचडीसी में, रु. 5.93 करोड़ की लागत पर 1MW क्षमता की सौर ऊर्जा इकाई स्थापित करने का कार्य भी प्रगति पर है।
- श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता क्रूज़ टूरिज्म के लिए एक जेट्टी का पुनरूद्धार कर रहा है और एक क्रूज जेट्टी के निर्माण के लिए आईडबल्यूएआई को एक भू-खंड हस्तांतरित करने की प्रक्रिया में है। देश के इस भाग में क्रूज पर्यटन के अध्ययन के लिए कोलकाता बंदरगाह एक सलाहकार नियुक्त करेगा।
- हेरिटेज टूरिज्म को बढ़ावा देने की दिशा में केओपीटी प्रतिबद्ध है। इंडेंचर मेमोरियल जेट्टी जो खिदिरपुर में केओपीटी की भूमि पर पुराने क्लॉक टॉवर सहित एक ऐतिहासिक स्थान है, से नदी-बंदरगाह-शहर के विभिन्न ऐतिहासिक भूमि और जल-चिह्नों को दिखाते हुए यहाँ से रिवर क्रूज़ का आयोजन जारी रखा है।
- बन्दरगाह आधारित बुनियादी ढांचे की स्थापना के लिए विभिन्न उद्योगों को लगभग 80 एकड़ जमीन आबंटित करने के साथ कई पत्तन आधारित उद्योगों पर विशेष बल दिया जा रहा है,जैसे एचडीसी में एलएनजी/एलपीजी भंडारण और वितरण की स्थापना आदि और सीमेंट, दलहन, खाद्यान्न के संचालन सुविधाओं के साथ-साथ प्रसंस्करण और भंडारण/नए सीएफ़एस इत्यादि की केडीएस में स्थापना शामिल है। कुकराहाटी में एलएनजी हैंडलिंग और कुलपी में ग्रीन फील्ड शिप रिसाइकलिंग सुविधा निजी ऑपरेटर द्वारा स्थापित करने सहित चाय पार्क स्थापित करने की योजना आदि तैयार की जा रही है।

बहु-माडल आईडब्ल्यूटी हब :

- भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (IWAI) ने जून 2017 में जलमार्ग विकास परियोजना (JMVP) के तहत 517 करोड़ रुपये की लागत से हल्दिया में एक बहु-माडल टर्मिनल के निर्माण का निर्णय किया है जो विश्व बैंक की तकनीकी / वित्तीय सहायता से राष्ट्रीय जलमार्ग-I (गंगा नदी) पर कार्यान्वित किया जा रहा है। 30 महीने की अवधि में इसके पूरा होने पर टर्मिनल की माल संचालन क्षमता प्रतिवर्ष 3.18 मिलियन टन होगी। हल्दिया गोदी परिसर में 61 एकड़ भूमि पर हल्दिया टर्मिनल स्थित होगा, जिसमें चार जलयानों के लिए बर्थिंग स्पेस, भंडारण के लिए स्टॉकयार्ड, बेल्ट कन्वेयर प्रणालीआदि की सुविधा होगी। टर्मिनल का उपयोग कोयला, फ्लाई ऐश, रसायन, पेट्रोलियम और गैस, निर्माण सामग्री, उर्वरक एवं खाद्य वस्तुओं के परिवहन के लिए किया जाएगा। सरकार जलमार्ग विकास परियोजना के अंतर्गत राष्ट्रीय जलमार्ग-I

(गंगा नदी) हल्दिया से वाराणसी तक 1390 कि. मीटर मार्ग का विकास विश्व बैंक की तकनीकी एवं वित्तीय सहायता से कर रही है जिस पर रूपया 5369 करोड़ की लागत आएगी। इस परियोजना से 1500-2000 भार वहन क्षमता (डीडब्ल्यूटी) वाले वाणिज्यिक जलयान उस मार्ग पर चल सकेंगे। पोत परिवहन मंत्रालय ने 30.10.2018 को आपूर्ति-परिचालन-प्रबंध मॉडल पर एक परिचालक को कोलकाता टर्मिनल की जीआर जेटी-I बीआईएसएन जेटी और जीआर जेटी-II सुपुर्द कर चुका है। भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण ने गंगा नदी के जरिए कोलकाता से वाराणसी तक कंटेनरों का परिवहन किया है। कोलकाता टर्मिनल से अपने देश के भीतर आने वाले और पूर्वोत्तर राज्य बांग्लादेश के लिए निर्यात-आयात किए गए माल को भी भेजने की सुविधा होगी। भारत बांग्लादेश के प्रोटोकॉल पथ पर चलने वाले पोत वणिको के लिए भी यह लाभदायक होगा।

- दिनांक 12.9.2019 को साहिबगंज, झारखंड में भारत के दूसरी नदीय मल्टीमॉडल टर्मिनल का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री द्वारा किया गया। नए टर्मिनल के माध्यम से साहिबगंज में सड़क-रेल-नदी परिवहन के संमिलन क्षेत्र को कोलकाता, हल्दिया और आगे बंगाल की खाड़ी से जोड़ा जाएगा। साथ ही, साहिबगंज नदी समुद्र मार्ग से बांग्लादेश के माध्यम से उत्तर-पूर्वी राज्यों से जुड़ जाएगा ।

सामुदायिक और बंदरगाह कर्मचारियों के लिए रहने की सुगमता

कुछ पहल जो विशेष उल्लेखनीय हैं : -

- रियायती दर पर सीमेंस वेलफेयर एसोसिएशन (नविक गृह) को आवास।
- केओपीटी द्वारा हुगली नदी के दोनों किनारों के घाटों का रखरखाव और पुनर्विकास।
- सुंदरवन परियोजनाओं में आदिवासी बच्चों के लिए छात्रावासों का निर्माण।
- मुदियाली फिशरीज को 123 एकड़ जल निकाय सहित भूमि हेतु लाइसेंस प्रदान किया जाना।
- कर्मचारियों और उनके परिवार की अनिवार्य चिकित्सा जांच और पेंशनरों को अतिरिक्त स्वास्थ्य लाभ।

कोलकाता पत्तन का 150वाँ वर्ष समारोह

- श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता ने अपने 150 वें वर्ष के प्रारंभ में एक भव्य समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर दिनांक 11.01.2020 को, भारत के माननीय प्रधानमंत्री, माननीय केंद्रीय पोत परिवहन राज्य मंत्री (स्वतंत्र

प्रभार) और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में मिलेनियम पार्क में पर्दे पर होने वाले समारोह में रवीन्द्र सेतु का डायनेमिक लाइट एंड साउंड शो का उद्घाटन हुआ और हावड़ा ब्रिज को एक शानदार जल स्क्रीन प्रक्षेपण के माध्यम से प्रदर्शित किया गया था। इसके बाद पोर्ट के 150 वर्ष के उपलक्ष्य में स्मारक स्थापित की गई।

- भारत के माननीय प्रधान मंत्री ने माननीय केंद्रीय पोत परिवहन राज्य-मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और पश्चिम बंगाल के माननीय राज्यपाल की उपस्थिति में दिनांक 12.01.2020 को नेताजी इंडोर स्टेडियम में आयोजित भव्य समारोह की अध्यक्षता की, जहाँ निम्नलिखित कार्यक्रम हुए --
  - कोलकाता बंदरगाह गान का शुभारंभ भारत के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा किया गया।
  - माननीय प्रधान मंत्री ने भारत के सबसे पुराने बंदरगाह की स्थायी विरासत को स्मारक डाक टिकट जारी कर सम्मानित की।
  - कोओपीटी कर्मचारियों की पेंशन देयता की वैधानिक पूर्ति सुनिश्चित करते हुए जीवन बीमा निगम के अध्यक्ष को 501 करोड़ का एकल वार्षिकी अंशदान दिया गया। राष्ट्र-निर्माण के योगदान में बुजुर्गों की भूमिका को मान्यता देते हुए, माननीय प्रधान मंत्री ने इस अवसर पर 100 वर्ष से अधिक उम्र के दो पेंशन धारकों को सम्मानित किया।
  - दिनांक 26.01.2020 को, नई दिल्ली में शानदार गणतंत्र दिवस समारोह में श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता की शानदार अतीत और जीवंत भविष्य को दर्शाने वाली एक झांकी प्रदर्शित की गई।

कोरोना वायरस के प्रकोप का मुकाबला करने के लिए तैयारी :

74 वें स्वतन्त्रता दिवस के दौरान कोरोना वारीयर्स को सम्मानित करते हुए पत्तन के अध्यक्ष, श्री विनीत कुमार

- श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता ने 29.01.2020 से थर्मल स्कैनर के साथ सभी विदेशी जहाजों पर सवार चालक दल के सदस्यों की नियमित जांच शुरू की। 31.3.2020 तक 544 जहाजों और 11258 चालक दल-सदस्यों का स्क्रीनिंग किया गया। पैरामेडिक्स को केडीएस, बज-बज और एचडीसी में तैनात किया गया तथा केडीएस और एचडीसी दोनों में क्वारंटाइन/आइसोलेशन वार्ड/सुविधाएं उपलब्ध कराई गई। अतिरिक्त भवनों की पहचान की जा रही है, जिनका उपयोग स्थिति की मांग के अनुसार किया जा सकता है। पोर्ट के प्रवेश करने वाले जहाजों को प्रवेश से पहले केओपीटी की मेडिकल टीम उनकी स्कैनिंग करती है और क्लियरेंस के बाद ही प्रवेश करते हैं।
- COVID-19 महामारी के प्रसार को रोकने के अपने प्रयास के क्रम में, श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता ने MoHFW INDIA के परामर्श से मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) तैयार की है। पोर्ट ने शिपिंग मंत्रालय, भारत सरकार के मार्गदर्शन में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ सुरक्षा उपायों आदि की तैयारियों और अनुपालन की समीक्षा/पोर्ट के कामकाज पर नियमित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग का नियमित आयोजन किया है। यह सुनिश्चित किया गया कि देश की व्यापक लॉकडाउन की अवधि के दौरान समुद्री/यातायात/चिकित्सा/नागरिक स्वच्छता आदि आवश्यक सेवाएं निर्बाध रूप से चलती रहें।

विचार मंथन

इस भागती दौड़ती जिंदगी में हम, मानव, स्वचालित मशीन की तरह बेतहाशा दौड़ रहे थे। कहीं उच्च अट्टालिकाओं का निर्माण, कहीं हवा से बात करने की तैयारी, कभी जल के भीतर दौड़ती ट्रेन, कभी ऊंचे हवा में लटके हुए पुल... कभी तो लगा कि हम दूसरे ग्रहों में जीवन शुरू कर देंगे। व्यावसायिकता, पैसा, वैभव, विलासिता, शान-ओ-शौकत, ऐशोआराम क्या कुछ नहीं कर दिखाया मानव-शक्ति ने, लेकिन...

जब आंखें खुली तो लगा दुनिया ही पूरी बदल चुकी थी। अचानक से सब कुछ अप्रत्याशित रूप से परिवर्तित हो गया। ना अब बड़े-बड़े शापिंग मॉल लुभावने थे ना ही पंच सितारा होटल रूमानी। मानव निर्मित बड़ी-बड़ी इमारतों सूनी हो गई। और तो और, मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर मानव की भीड़ से परे हो गए। ना सिनेमा हॉल, ना मनोरंजन पार्क ना करोड़ों रुपयों के खर्च से निर्मित पुल, जहाज, ट्रेन या कोई गाड़ी... कुछ भी मानव के प्रतिबंध से अछूता नहीं रहा।

भावनाओं का इज़हार करने में दूरी अति-आवश्यक हो गई। आपस में मिलना-जुलना, बातों-बातों में हाथ थाम लेना, घुड़की के साथ थपकी देना या प्यार से चुंबन की मुहर लगा देना... एकाएक गलत हो गया। सुख-दुःख में मिलकर भावनाएं बांटना, किसी अपने के आने का इंतजार करना, चाय पर चर्चा, रातों की महफिल, मुहल्ले की गपशप, कभी चटखारे लेकर किस्से-कहानी सुनाते हुए हाथ ताली देना, तो कभी गुप्त खोजी ख़बरें कानों में फुसफुसाना..... सभी एकाएक अपराध की श्रेणी में माना जाने लगा। बीमार बंधु या परिजन से मिलने जाने पर बंदिश... तो किसी की मृत्यु पर सम्मिलित होने से रोक। दूर रहने वाले मां-बाप या रिश्तेदारों से मिलने न जाकर 'दूर-संचार' से ही बात करना प्यार का लक्षण माना जाने लगा। 'दूरी' बना कर रखना ही व्यावहारिकता हो गई।

और इसी बीच, न जाने कैसे और कब खूबसूरत इमारतें, ऊंचा ओहदा, दौलत, वैभव सभी शक्तिहीन महसूस होने लगे। प्राण सांसों पर टिकी और सांस ऑक्सीजन पर, मानव निर्मित कुछ भी जिंदगी को बहुमूल्य सांसें देने में असमर्थ, और इस समय, स्वच्छ सांस ही एकमात्र आवश्यकता रह गई।

इन सब से परे परम-शक्ति की जादूगरी देखिए, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु सभी का जीवन यथावत है। पंच महाभूत, पवन, अग्नि, जल, वायु और आकाश भी अपनी जगह स्थिर हैं। सभी स्वच्छंद हैं। अगर कोई बेड़ियाँ भरी जिंदगी जी रहा है तो वो है मानव, अपनी ही बनाई सलाख़ों के पीछे, अपना टूटा हुआ दंभ लिए। प्रकृति के हर संसाधन के दोहन का लालच मन में लिए, खूबसूरत अट्टालिकाएं बनाने का लोभ लिए और अपने को असीमित रूप से शक्तिमान समझने का अभिमान लिए। ऐसे विकराल जीव का जीवन क्षण में अति सूक्ष्म विषाणु ने पूर्ण रूप से क्षत-विक्षत कर दिया।

पर, क्या हम अब भी अपना वास्तविक अस्तित्व समझ पाए हैं? क्या हम पंच महाभूत की असीम शक्तियों का अहसास कर पाए हैं? क्या हम जान रहे हैं कि प्रकृति में हमारी मौजूदगी अपरिहार्य नहीं है? क्या हम स्वयं को पंच महाभूत का मालिक समझने के दंभ को विध्वंस कर पाए हैं? क्या हम अन्य जीवन शक्तियों के साथ, शांतिपूर्ण तरीके से, मिल-जुल कर, सह-अस्तित्व आवश्यक जानकर, अपनी जीवन-शैली बदलने का निर्णय ले पाए हैं? क्या हम जान पाए हैं कि जान है, तभी तो मानव के लिए जहान है? आइए, मिलकर विचार, करें।

डॉ. प्रीति महतो
मुख्य सतर्कता अधिकारी

गिरमिटिया एक करुण कथा

कोलकाता पत्तन न्यास के गार्डेनरीच में स्थित सूरीनाम घाट का परिचय पिछले अंक में कराया गया था, जहां से सर्वप्रथम भारतीय गिरमिटिया सूरीनाम के लिए रवाना किए गए थे। उनके स्मृति में 7 अक्तूबर, 2015 को तत्कालीन विदेश मंत्री माननीया सुषमा स्वराज जी ने युगल प्रतिमा का अनावरण किया था, जो सूरीनाम की राजधानी पारामारीबो के "बाबा और माई" के मूल स्मारक को प्रतिबिम्बित करता है।

15 दिसंबर, 2019 रविवार के संध्या प्रहर जोड़ासांको के रवीन्द्र मंच में गिरमिटिया फाउंडेशन द्वारा एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में कवि और फिल्म समीक्षक श्री मनोज भावुक, मरीशस से श्रीमती स्वाति बोले भिखा, नीदरलैंड से प्रसिद्ध गीतकार श्री राजमोहन सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। श्री दिलीप गिरि, श्री राजेश शर्मा सहित अन्य सदस्यों ने समारोह की सफलता में योगदान दिया। 'एक करुण कथा' नामक लघु फिल्म का प्रदर्शन हुआ जिसमे बिहार और उत्तर प्रदेश के या यूं कहें कि पूर्वाञ्चल के गरीब मजदूर यहां के गोरे साहबों के जुल्म और शोषण से त्रस्त होकर अपने वतन, अपनी भूमि, अपना गांव, अपना घर छोड़ने पर मजबूर हुए। अंग्रेजो ने गरीब ग्रामीणों को एक-एक रोटी तक को मोहताज कर दिया था। दूसरी ओर एक ऐसे देश का सपना दिखाया गया जो प्रभु का देश है, श्रीराम (सूरीनाम) द्वीप हैं। वहाँ धर्म अर्जन के साथ-साथ पैसे कमाने और दारिद्र दूर करने के सपने दिखाए गए। और फिर उन्होंने गुलामी की शर्त पर लोगों को विदेश भेजना प्रारंभ किया। तब दास प्रथा समाप्त हो चुकी थी। 1870 में ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया और हालैण्ड के सम्राट विलियम तृतीय के बीच हुए समझौते के परिणामस्वरूप पुरानी दास प्रथा को शर्तबंधी का नया जामा पहनाकर पुनर्जीवित किया गया। इन मजदूरों को गिरमिटिया कहां गया। गिरमिट शब्द अग्रेजों के अग्रीमेंट शब्द का अपभ्रंश बताया जाता है। जिस कागज पर अंगूठे का निशान लगवाकर हर साल हजारों मजदूर दक्षिण अफ्रीका या अन्य देशों को भेजे जाते थे, उसे मजदूर और मालिक गिरमिट कहते थे। इस दस्तावेज के आधार पर मजदूर गिरमिटिया कहलाते थे। हर साल 10-15 हजार मजदूर गिरमिटिया बनाकर फ़िजी, गुयाना, त्रिनिदाद, टोबैगो, नेटाल (दक्षिण अफ्रीका) आदि देशों को ले जाए जाते थे। यह सब सरकारी नियम के अंतर्गत था। और इस तरह के कारोबार करने वालों को सरकारी संरक्षण प्राप्त था। दक्षिणी अमेरिका के इन तटवर्ती देशों में गन्ना और कपास के खेती के लिए मजदूरों का अभाव था और इस अभाव को भारतीय गिरमिटियों ने पूरा किया।

गुलाम पैसा चुकाने पर भी गुलामी से मुक्त नहीं हो सकता था, लेकिन गिरमिटियों पाँच साल बाद छूट सकते थे। गिरमिटिया छूट तो सकते थे, लेकिन उनके पास वापस भारत लौटने के पैसे नहीं होते थे। उनके पास और कोई चारा नहीं होता था कि या तो अपने मालिक के पास काम करें या किसी अन्य मालिक के गिरमिटिया हो जाएं। वे बेचे भी जाते थे। आमतौर पर गिरमिटिया चाहे औरत हो या मर्द उसे विवाह करने की छुट नहीं थी। यदि कुछ गिरमिटिया विवाह करे भी तो भी उन पर गुलामी वाले नियम लागू होते थे। जैसे औरत किसी को बेची जा सकती थी और बच्चे किसी और को बेचे जा सकते थे। इन देशों में हिंदुस्तानियों को जिस कठिन दौर से गुजरना पड़ा वह एक दर्द भरी कहानी है। कुली शब्द से संबोधित इन भारतवंशियों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था। दुःख-दर्द की यह दास्तां समय के साथ भारत भी पहुँची और वहाँ शर्तबंधी समाप्त करने के लिए आवाज उठाई गई।

गिरमिटिया लोगों की जो औरत भारत में ही रह गयी थी, उनका और भी बुरा हाल था। वे सधवा होकर भी विधवा का जीवन जीने के लिए मजबूर थी। उन्हें दारूण आर्थिक अभाव का सामना करना पड़ता था। उनके पिया पूरबी विदेशवा, एक अपरिचित और अंजान देश में चले गए जहां से ना कोई चिट्ठी ना किसी संदेश की गुंजाइश थी। उन्हें विरहिणी का जीवन जीना पड़ा। पति 5 साल का अनुबंध समाप्त होने के बाद भी इतना नहीं जोड़ पाया कि वह वापस घर आ सके। उसे दुबारा एग्रीमेंट करना पड़ा। उसे दुबारा गिरमिटिया बंधन में बंधना पड़ा। इस तरह गुलामी में उसकी जिंदगी कट गयी। वह वही का होकर रह गया। कुछ ने वहीं शादी कर ली। एक अलग परिवार बसा लिया। घर में "रहिए ताकत बिरहिनिया बान्ही के लगनिया के डोर" ताकती ही रह गई। उनके दर्द को राजमोहन ने कुछ इस तरह बयां किया --

सात समुंदर पार कराई के
एक नवाँ देश के सपना दिखाई के
कइसे हमके भरमाई के
ले गइल दूर सरनाम बताई के...

विरहिनियों का दर्द कवि ने कुछ इस तरह व्यक्त किया है :

रेलिया बैरन पिया को लिए जाए रे, रेलिया बैरन
जवने टिकसवा से बलम मोरे जैहें, सजन मोरे जैहें,
पानी बरसे टिकस गल जाए रे, रेलिया बैरन
जवने सहरिया को बलम मोरे जैहें, रे सजन मोरे जैहें,
आगी लगी सहर जल जाए रे, रेलिया बैरन....

गिरमिटिया जैसी अमानवीय प्रथा के खिलाफ सर्वप्रथम दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी ने आवाज उठाई थी। उन्होंने 1916 में कांग्रेस अधिवेशन में "भारत सुरक्षा और गिरमिट प्रथा अधिनियम" प्रस्ताव रखा था। 1917 में इस प्रथा के विरोध में अहमदाबाद में एक विशाल सभा का आयोजन हुआ। इस सभा में **सीएफ एंड्रयूज और हेनरी पोलाक** ने भी भाषण दिया था। इस सभा में पंडित मदन मोहन मालवीय, सरोजनी नायडू जैसे वक्ताओं ने भी अपनी बात रखी थी। इतने ढेर सारे विरोध से ब्रिटिश सरकार को इस प्रथा को समूल हटाने के लिए सोचना पड़ा। इस प्रथा को मई 1917 तक खत्म करने का अल्टिमेटम ब्रिटिश सरकार को दिया गया। ब्रिटिश सरकार को झुकना पड़ा। गिरमिटिया प्रथा मार्च 1917 को खत्म कर दी गयी।

पराए देश में बसे ये गिरमिटिया अब एक सुंदर जीवन व्यतीत करने लगे। ये आज भी अपनी सभ्यता और संस्कृति को बचाने में लगे है। वे शिक्षा, कला, मनोरंजन और राजनीति के हर क्षेत्र में उन्नति कर रहे हैं। भारतीय उद्यम और व्यवसाय में स्थानीय लोगों पर भारी पड़ते हैं। कई देशों के राष्ट्र प्रमुख इन्हीं गिरमिटिया लोगों में से ही बने हैं। एक बार स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेयी ने कहा था -- "भारत से जाने वाला हर भारतीय अपने साथ एक छोटा भारत लेकर जाता है।" गिरमिटिया लोग भी अपने साथ भोजपुरी भाषा, अपना खान-पान, धार्मिक पुस्तकें और रीति रिवाज लेकर गये है और आज भी उनका अलख जगा रहे हैं।

-संकलित

अशोक कुमार ठाकुर
वरिष्ठ सहायक सचिव (राजभाषा)